SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

बाइबल परिश्रम के बारे में क्या कहती है? — द फाउंडेशन · स्ट्रॉन्स नंबरों के साथ केजेवी पवित्रशास्त्र

THE FOUNDATION · THE ORIGINAL STUDY, SET IN THE ANCIENT ORDER

परिश्रम — मूलभूत बाइबलीय सिद्धांत

उद्घाटन शब्द

> *यह आधारभूत अध्ययन है, और यह वहीं से आरंभ होता है जहाँ से प्रेरित आरंभ करता है: और इसी कारण, सारी सावधानी लगाकर। सावधानी शीघ्रता है, सच्ची चिंता है, और उत्सुकता है। पवित्रशास्त्र सावधान और आलसी को पास-पास रखता है, ताकि हम उनकी चालों को देखें और बुद्धिमान बनें। सावधान का हाथ राज्य करेगा; परन्तु आलसी बेगार में रहेगा। परन्तु यह ध्यान दें: सावधान के विचार बहुतायत की ओर बढ़ते हैं। सावधानी केवल हाथ में नहीं है; यह मन में भी है। अपने विश्वास पर सद्गुण बढ़ाने के लिए सारी सावधानी लगाओ। तब कार्य भीतर की ओर मुड़ता है: मन नया किया जाता है, हर विचार मसीह की आज्ञाकारिता के अधीन बंदी बनाया जाता है, यहाँ तक कि हमारे पास मसीह का मन हो जाता है और हम पूरी शान्ति में रखे जाते हैं। वह उन सभी को जो लगन से उसे ढूँढ़ते हैं, प्रतिफल देनेवाला है। इसे खोज निकालो।*

इस अध्ययन में उत्तर दिए गए तीन प्रश्न:

1. परिश्रम क्या है, और शास्त्र परिश्रमी को आलसी के विपरीत किस प्रकार प्रस्तुत करता है?
2. उद्यमी मनुष्य क्या करता हुआ पाया जाता है — और वह अंत तक क्या खोजता है?
3. परिश्रम विश्वास में क्या जोड़ता है, और मन कैसे नया बनता है जब तक कि हमारे भीतर मसीह का मन न हो जाए?

ग्रीक मुख्य शब्द

"परिश्रम" — **G4710 spoude** — शीघ्रता, सच्ची चिंता, परिश्रम
लंगर शब्द — सारी रीति से प्रयत्न करके (2 पतरस 1:5); अपनी बुलाहट और चुनाव को स्थिर करने के लिये प्रयत्न करो (2 पतरस 1:10)

"आलसी" — **G3576 nothros** — धीमा, सुस्त
परिश्रमी को कभी क्या नहीं होना चाहिए — आलसी न बनो, वरन उनके अनुयायी बनो जो प्रतिज्ञाओं के वारिस हैं (इब्रानियों 6:12)

"सद्गुण" — **G703 arete** — सद्गुण, प्रशंसा, उत्कृष्टता
परिश्रम विश्वास में क्या जोड़ता है (2 पतरस 1:5); वही शब्द 1 पतरस 2:9 में प्रशंसा के रूप में अनुवादित किया गया है

"महिमा" — **G1391 doxa** — सम्मान, प्रशंसा, महिमा
उसने हमें महिमा और सद्गुण के लिए बुलाया है (2 पतरस 1:3)

"उत्सुकता से खोजना" — **G1567 ekzeteo** — खोजना, ढूंढना

जो उसको खोज में लगे रहते हैं, वह उनका प्रतिफलदाता है (इब्रानियों 11:6)

"उत्कट" — **G2204 zeo** — उबलना, उबालना
आत्मा में उत्साही होकर उसने प्रभु की बातें ध्यान से सिखाईं (प्रेरितों के काम 18:25)

"नवीनीकरण" — **G342 anakainosis** — नया करना, नवीनीकरण करना
तुम मन के नए हो जाने से बदलते जाओ (रोमियों 12:2)

"मन" — **G3563 nous** — मन, बुद्धि
हमारे पास मसीह का मन है (1 कुरिन्थियों 2:16)

"सुबुद्धि" — **G4995 sophronismos** — एक स्वस्थ मन
भय की आत्मा नहीं, परन्तु सामर्थ्य, और प्रेम, और संयमित मन की आत्मा (2 तीमुथियुस 1:7)

हिब्रू मुख्य शब्द

"परिश्रमी" — **H2742 charuts** — तेज़; दाँवने का एक यंत्र; उत्तम सोना; निर्णय
उद्यमी का हाथ प्रभुता करता है (नीतिवचन 12:24); उद्यमी मनुष्य का धन बहुमूल्य है (नीतिवचन 12:27)

"आलसी" — **H6102 atsel** — आलसी, सुस्त
आलसी मनुष्य का मार्ग कंटीली बाड़ के समान है (नीतिवचन 15:19); वही शब्द है आलसी — हे आलसी, चींटी के पास जा (नीतिवचन 6:6)

"आलस्य" — **H6103 atslah** — आलस्य, निष्क्रियता
बहुत आलस्य से छत टपकने लगती है (सभोपदेशक 10:18)

"परिश्रमपूर्वक ढूंढ़ता है" — **H7836 shachar** — जल्दी खोजना, तत्परता से खोजना
जो कोई भलाई की खोज बड़े यत्न से करता है, वह अनुग्रह प्राप्त करता है (नीतिवचन 11:27)

"मन" — **H3336 yetser** — कल्पना, स्वरूप
जिसका मन तुझ पर टिका रहता है (यशायाह 26:3)

"ठहरा रहा" — **H5564 samak** — ठहरना, टेक लगाना, संभालना
जिसका मन तुझ पर टिका है, तू उसकी रक्षा शांति में, शांति में करेगा (यशायाह 26:3)

(मेरे व्यक्तिगत विचार — चारुत्स (H2742, परिश्रमी) का अर्थ है परिश्रमी। इसका अर्थ एक तेज़ दाँवने वाला औज़ार, उत्तम सोना, और निर्णय भी है — निर्णय की तराई, योएल 3:14। परिश्रमी मनुष्य का धन बहुमूल्य होता है: यह शब्द स्वयं सोना है।)

I. सारी सावधानी करना — आधार

A. 2 पतरस 1:5 और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ **[G703 arete ⚑]** **[G4710 spoude ⚑]**
सर्व प्रयत्न करके → अपने विश्वास पर सद्गुण बढ़ाओ।

II. परिश्रमी और आलसी

A. नीतिवचन 12:24 कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आलसी बेगार में पकड़े जाते हैं। **[H2742 charuts ⚑]**
कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आलसी बेगार में पकड़े जाते हैं.

B. नीतिवचन 15:19 आलसी का मार्ग काँटों से रुन्धा हुआ होता है, परन्तु सीधे लोगों का मार्ग राजमार्ग ठहरता है। **[H6102 atsel ⚑]**
आलसी का मार्ग = कांटों की बाड़ है; परन्तु धर्मियों का मार्ग चौरस किया जाता है।

C. नीतिवचन 18:9 जो काम में आलस करता है, वह बिगाड़नेवाले का भाई ठहरता है।
अपने काम में आलसी = महान विनाशक का भाई।

D. नीतिवचन 19:24 आलसी अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु अपने मुँह तक कौर नहीं उठाता।
आलसी अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु उसे फिर मुँह तक नहीं ले जाता।

E. नीतिवचन 21:25 आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते हैं। (26) कोई ऐसा है, जो दिन भर लालसा ही किया करता है, परन्तु धर्मी लगातार दान करता रहता है।
उसके हाथ काम करने से इनकार करते हैं → आलसी की चाहत उसे मार डालती है।

F. नीतिवचन 24:30 मैं आलसी के खेत के पास से और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की बारी के पास होकर जाता था (31) तो क्या देखा, कि वहाँ सब कहीं कटीले पेड़ भर गए हैं; और वह बिच्छू पौधों से ढँक गई है, और उसके पत्थर का बाड़ा गिर गया है। (32) तब मैंने देखा और उस पर ध्यानपूर्वक विचार किया;

हाँ मैंने देखकर शिक्षा प्राप्त की। (33) छोटी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के लेटे रहना (34) तब तेरा कंगालपन डाकू के समान, और तेरी घटी हथियार-बन्द के समान आ पड़ेगी।

आलसी का खेत → कांटों से भरा हुआ + पत्थर की दीवार टूटी हुई → दरिद्रता और अभाव।

G. सभोपदेशक 10:18 आलस्य के कारण छत की कड़ियाँ दब जाती हैं, और हाथों की सुस्ती से घर चूता है। **[H6103 atslah ⚑]**

अधिक आलस्य से → भवन जीर्ण हो जाता है; हाथों की सुस्ती से → घर चूने लगता है।

H. नीतिवचन 19:15 आलस से भारी नींद आ जाती है, और जो प्राणी ढिलाई से काम करता, वह भूखा ही रहता है।

आलस्य → गहरी नींद; आलसी प्राणी भूखा रहेगा।

I. नीतिवचन 6:6 हे आलसी, चींटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो जा। (7) उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला (8) फिर भी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं। (9) हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी? (10) थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना (11) तब तेरा कंगालपन राह के लुटेरे के समान और तेरी घटी हथियार-बन्द के समान आ पड़ेगी।

चींटी के पास जा → उसके मार्गों पर विचार कर, और बुद्धिमान बन।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — नीतिवचन 24 और नीतिवचन 6 में एक ही शब्द दो बार उपयोग किए गए हैं: थोड़ी नींद, थोड़ी झपकी, थोड़ी देर हाथ बांधकर सोना। ये शब्द दो बार दिए गए हैं, इसलिए यह चेतावनी निश्चित है।)

J. नीतिवचन 26:13 आलसी कहता है, "मार्ग में सिंह है, चौक में सिंह है!" (14) जैसे किवाड़ अपनी चूल पर घूमता है, वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटें लेता है। (15) आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता है, परन्तु आलस्य के कारण कौर मुँह तक नहीं उठाता। (16) आलसी अपने को ठीक उत्तर देनेवाले सात मनुष्यों से भी अधिक बुद्धिमान समझता है।

आलसी कहता है, मार्ग में सिंह है → वह अपनी दृष्टि में सात बुद्धिमान पुरुषों से भी अधिक बुद्धिमान है।

K. नीतिवचन 12:27 आलसी अहेर का पीछा नहीं करता, परन्तु कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है।

परिश्रमी मनुष्य का धन = बहुमूल्य।

L. नीतिवचन 13:4 आलसी का प्राण लालसा तो करता है, परन्तु उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु कामकाजी हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं।

आलसी लालसा करता है, परन्तु कुछ नहीं पाता; परन्तु परिश्रमी का प्राण पुष्ट किया जाएगा।

M. नीतिवचन 21:5 कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।

परिश्रमी के विचार → बहुतायत; उतावले के → अभाव।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — इस शब्द पर ध्यान दें: लगनशील के विचार। लगन हाथ में आने से पहले विचारों में होती है। यह अध्ययन मन के नवीनीकरण पर पुनः इसी बात पर लौटता है।)

N. नीतिवचन 11:27 जो यत्न से भलाई करता है वह दूसरों की प्रसन्नता खोजता है, परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी होता है, उसी पर बुराई आ पड़ती है। **[H7836 shachar ⚑]**

भलाई का यत्न से खोजी → अनुग्रह प्राप्त करता है।

III. उन लोगों को प्रतिफल देनेवाला जो लगन से उसे ढूंढ़ते हैं

A. इब्रानियों 11:6 और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। **[G1567 ekzeteo ⚑]**

कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है.

B. प्रेरितों के काम 18:24 अपुल्लोस नामक एक यहूदी जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था इफिसुस में आया। **[G2204 zeo ⚑]** (25) उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय में ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था।

पवित्रशास्त्र में सामर्थी + आत्मा में उत्साही → प्रभु की बातें तत्परता से सिखाई।

IV. तत्पर रहो, कि तुम उससे शान्ति में पाए जाओ

A. 2 पतरस 3:14 इसलिए, हे प्रियों, जबकि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो।

परिश्रमी बनो → उसके द्वारा शांति में, निष्कलंक और निर्दोष पाए जाओ।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — यह देखते हुए कि आप ऐसी बातों की खोज करते हैं: किन बातों की खोज? इससे ठीक पहले वाली आयत दिखाती है कि वे क्या हैं।)

B. 2 पतरस 3:10 परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़े शोर के साथ जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे, और पृथ्वी और उसके कामों का न्याय होगा। (11) तो जबकि ये सब वस्तुएँ, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में

कैसे मनुष्य होना चाहिए (12) और परमेश्वर के उस दिन की प्रतीक्षा किस रीति से करनी चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। (यशा. 34:4)

परमेश्वर के दिन के आगमन की बाट जोहते और उसके शीघ्र आने का यत्न करते हुए → तुम्हें कैसे लोग होना चाहिए।

C. इब्रानियों 6:11 पर हम बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहे। **[G3576 nothros ⚑]** (12) ताकि तुम आलसी न हो जाओ; वरन् उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।

अंत तक वही तत्परता दिखाओ → आलसी नहीं, बल्कि उनके अनुयायी जो प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।

D. इब्रानियों 12:15 और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ। (2 यूह. 1:8, व्यव. 29:18)

और ध्यान से देखते रहो → और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए.

E. 2 पतरस 1:10 इस कारण हे भाइयों, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली भाँति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे; **[G4710 spoude ⚑]**

और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली भाँति यत्न करते जाओ → तो कभी भी ठोकर न खाओगे.

(मेरे व्यक्तिगत विचार — यदि तुम ये बातें करते हो: कौन-सी बातें? वे बातें जो तुम्हारे विश्वास में जोड़ी गई हैं। इसलिए अब यह अध्ययन पहली बात की ओर मुड़ता है जो जोड़ी गई है: अपने विश्वास में सद्गुण जोड़ो।)

V. अपने विश्वास में सद्गुण जोड़ो

A. 2 पतरस 1:3 क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। **[G703 arete ⚑] [G1391 doxa ⚑]**

उसकी दिव्य शक्ति ने सब कुछ दिया है → उसने हमें महिमा और सद्गुण के लिए बुलाया है।

B. 1 पतरस 2:9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। (निर्ग. 19:5,6, व्यव. 7:6, व्यव. 14:2, यशा. 9:2) **[G703 arete ⚑]**

एक चुनी हुई पीढ़ी + एक राजकीय याजकपद + एक पवित्र जाति + एक निज प्रजा → उसके गुण प्रचार करना जिसने तुम्हें बुलाया।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — यहाँ "स्तुति" शब्द अरेते (G703, सद्गुण) है, वही शब्द जो सद्गुण के लिए प्रयुक्त होता है। जिन्हें परमेश्वर ने बुलाया है, वे उसके गुणों को प्रगट करते हैं जिसने उन्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है।)

C. फिलिप्पियों 4:8 इसलिए, हे भाइयों, जो-जो बातें सत्य हैं, और जो-जो बातें आदरणीय हैं, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं, और जो-जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात्, जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो। **[G703 arete ⚑]**

यदि किसी में कोई सद्गुण हो → इन बातों पर ध्यान करो।

D. फिलिप्पियों 4:6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। (7) तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। (यशा. 26:3)

किसी बात की चिन्ता मत करो → परमेश्वर की शान्ति तुम्हारे हृदयों और विचारों की रक्षा करेगी।

VI. अपने मन के नए हो जाने से बदल जाओ

A. रोमियों 12:1 इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। **[G342 anakainosis ⚑]** (2) और इस संसार के सदृश्य न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

इस संसार के सदृश न बनो → अपनी बुद्धि के नए हो जाने से बदलते जाओ → ताकि परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा को अनुभव से मालूम करते रहो।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — शरीर तो दिया गया है, परन्तु मनुष्य मन के नए हो जाने से बदल जाता है। यहाँ लगनशीलता भीतर की ओर मुड़ जाती है: केवल हाथों का परिश्रम नहीं, वरन् लगनशील मनुष्य के विचार।)

B. 2 कुरिन्थियों 10:3 क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तो भी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। (4) क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। (5) हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

कल्पनाओं को गिरा देना → हर विचार को मसीह की आज्ञाकारिता में बंदी बना लेना।

C. 1 कुरिन्थियों 2:16 "क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है, कि उसे सिखाए?" परन्तु हम में मसीह का मन है। (यशा. 40:13)
[G3563 nous ⚑]

हमारे पास मसीह का मन है।

D. फिलिप्पियों 2:5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; (6) जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। (7) वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। (8) और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

उसमें वही मनसा हो जो मसीह यीशु में भी थी → उसने अपने आपको दीन किया + मृत्यु तक आज्ञाकारी बना।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — कुरिन्थियों कहता है कि हमारे पास मसीह का मन है; फिलिप्पियों कहता है कि यह मन तुम में हो। जो हमारे पास है, हमें उसे अपने में जीवित रहने देना चाहिए।)

E. रोमियों 8:6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। (7) क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है। (8) और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। (9) परन्तु जबकि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

शारीरिक चिंता = मृत्यु; आत्मिक चिंता = जीवन और शांति।

F. यशायाह 26:3 जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। (फिलि. 4:7) **[H5564 samak ⚑] [H3336 yetser ⚑]**

जिसका मन तुझ पर स्थिर है → तू उसे पूरी शान्ति से रखेगा।

G. इफिसियों 4:23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ (24) और नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है। (कुलु. 3:10, 2 कुरि. 5:17)

अपने मन की आत्मा में नया हो जाओ → नए मनुष्यत्व को धारण कर लो।

H. 2 तीमुथियुस 1:7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है। **[G4995 sophronismos ⚑]**

डर की आत्मा नहीं → सामर्थ्य + प्रेम + संयमित मन।

I. फिलिप्पियों 4:13 जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ ।

जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ.

J. 1 पतरस 1:13 इस कारण अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है।

अपने मन की कमर बाँधो → अंत तक आशा रखो।

K. फिलिप्पियों 4:8 इसलिए, हे भाइयों, जो-जो बातें सत्य हैं, और जो-जो बातें आदरणीय हैं, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं, और जो-जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात्, जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

जो कुछ भी सत्य + आदरणीय + न्यायसंगत + शुद्ध + प्रिय + सुनाम की बातें हैं → इन्हीं बातों पर ध्यान करो।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — यह अध्ययन वहीं लौट आता है जहाँ से यह आरंभ हुआ था: सारी रीति से प्रयत्न करना। प्रयत्न केवल हाथों का परिश्रम नहीं है। यह भीतर की ओर कार्य करता है, यहाँ तक कि मन नया हो जाता है, मसीह की आज्ञाकारिता में बंदी बनाया जाता है, और उस पर टिका रहकर पूर्ण शांति में रहता है।)

समापन

2 पतरस 1:10 इस कारण हे भाइयों, अपने बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध करने का भली भाँति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे;

क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे.

2 पतरस 1:11 वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे।

तुम्हारे लिये सनातन राज्य में प्रवेश करने का अधिकार बहुतायत से दिया जाएगा।

(मेरे व्यक्तिगत विचार — यहाँ पूरा अध्ययन एक ही सांस में है। यह सब प्रकार की सावधानी करने से आरम्भ होता है और आपको भरपूर प्रवेश दिए जाने पर समाप्त होता है। इन दोनों के बीच: सावधानी को आलसी के विपरीत रखा गया है। यह परमेश्वर को ढूंढ़ने में और उसके दिन की बाट जोहने में देखी जाती है। फिर यह भीतर की ओर मुड़ती है — विश्वास पर सद्गुण बढ़ाने में, मन के नए हो जाने में, हर विचार को मसीह के अधीन बंदी बनाने में — जब तक कि वह मनुष्य परमेश्वर पर स्थिर होकर पूर्ण शान्ति में न रहे, और कभी न गिरे।)

अभ्यास प्रश्नोत्तरी

1. 2 पतरस 1:5 — इसी कारण तुम अपनी ओर से सारी चेष्टा करके अपने विश्वास पर यह बढ़ाओ:

a) ज्ञान
b) सद्गुण

c) धैर्य

2. नीतिवचन 12:24 — परिश्रमी का हाथ:

a) शासन करना
b) बेगार में रहे
c) मोटा किया जाएगा

3. इब्रानियों 11:6 — वह उन लोगों को प्रतिफल देता है जो:

a) विश्वास करना कि वह है
b) परमेश्वर के पास आना
c) लगन से उसे खोजें

4. 2 Peter 3:14 — Be diligent that ye may be found of him:

a) शांति से, निष्कलंक, और निर्दोष
b) सारे पवित्र चालचलन और भक्ति में
c) एक बड़े शोर के साथ

5. रोमियों 12:2 — तुम इसके द्वारा बदल जाओ:

a) परमेश्वर की दयाएँ
b) तुम्हारी बुद्धिमानी की सेवा
c) तुम्हारे मन का नया हो जाना

6. रोमियों 8:6 — शरीर पर मन लगाना है:

a) जीवन और शांति
b) मृत्यु
c) पूर्ण शांति

7. यशायाह 26:3 — तू उसे पूरी शान्ति से रखेगा, जिसका मन:

a) तुझ पर स्थिर रहा
b) उतावला
c) कमर बाँधी

उत्तर कुंजी: 1-b, 2-a, 3-c, 4-a, 5-c, 6-b, 7-a

यह अध्ययन कैसे शाखाओं में विभाजित होता है

अध्ययन इसमें और कैसे जोड़ता है: सद्गुण में ज्ञान जोड़ा जाता है, और ज्ञान में संयम (2 पतरस 1:5-7)। यह इस श्रृंखला का अगला चरण है, वह सम्पूर्ण सीढ़ी जो तत्परता के साथ दी गई है।

यह अंत तक कैसे पहुंचता है: परिश्रमी उनका अनुसरण करते हैं जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं (इब्रानियों 6:12)। परिश्रम विश्वास और धीरज के साथ चलता है, यहां तक कि अंत तक।

शब्दों का महत्व कैसे है: चरुत्स (H2742, परिश्रमी) परिश्रमी के लिए शब्द है। यह उत्तम सोने के लिए और निर्णय की घाटी के लिए भी शब्द है — परिश्रमी मनुष्य एक दृढ़निश्चयी मनुष्य होता है, और उसकी संपत्ति बहुमूल्य होती है।

यह आप पर कैसे लागू होता है: मन का नया हो जाना (रोमियों 12:2) परिश्रम का आंतरिक कार्य है। हर एक विचार को मसीह की आज्ञाकारिता में बंदी बना लो (2 कुरिन्थियों 10:5), और सिद्ध शान्ति में रखे जाओ (यशायाह 26:3)।

अनंतकाल के लिए इसका अर्थ यह है: परिश्रम करो, और तुम कभी ठोकर न खाओगे। अनन्त राज्य में तुम्हें बहुतायत से प्रवेश करने दिया जाएगा (2 पतरस 1:10-11)।

उद्धार पाने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

> *हमारे बाइबल अध्ययन को देखिए — "मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए"*

SOURCES & CREDITS

Scripture: Hindi Indian Revised Version Bible (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.
Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEPBible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEPBible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0); Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).